DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

Part -3

LIVE 01-05-2024 05:00 PM

पारिवारिक वर्गीकरण

1. यूरेशिया
   1. भारोपीय भाषा
   2. द्राविड
   3. बुरुशास्की
   4. यूराल-अल्ताई
   5. काकेशी
   6. चीनी
   7. जापानी कोरियाई
   8. अत्युत्तरी (हाइपरबोरी)
   9. बास्क भाषा परिवार
   10. सामी-हामी भाषा परिवार

2. अफ्रीका
   11. सूडानी
   12. बान्टू
   13. होटेन्टोट बुशमैनी

3. प्रशान्त महासागरीय
   14. मलय-पोलिनेशियाई
   15. पापुई भाषा परिवार
   16. आस्ट्रेलियन
   17. दक्षिण-पूर्व एशियाई

4. अमरीकी ख[illegible]
   18. अम[illegible] भाषा[illegible]

पापुई परिवार

क्षेत्र — मलाया और पोलिनेशिया के मध्य न्यूगिनी, सोलोमन द्वीप समूह आदि ।

मुख्य विशेषताएँ – (१) ये भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक हैं।

(२) पद-रचना उपसर्ग और प्रत्यय के योग से होती है। जैसे— न्यूगिनी की नफोर भाषा में, म्नफ़ (सुनना)> ज-म्नफ़ (मैं सुनता हूँ), व-म्नफ़ (तू सुनता है), इ-म्नफ़ (वह सुनता है), सी- म्नफ़ (वे सुनते हैं)। कर्म को जोड़ना - ज-म्नफ़- अऊ (मैं तेरी बात सुनता हूँ) । बहुवचन 'सी' लगाकर — स्नून (आदमी) > स्नून - सी (कई आदमी) ।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

आस्ट्रेलियन परिवार

क्षेत्र - संपूर्ण आस्ट्रेलिया महाद्वीप तथा तस्मानिया ।

प्रमुख भाषाएँ - मैक्कारी (मैक्कारी झील के पास)
कामिलरोई (मैक्कारी झील के पास)

संक्षिप्त परिचय - भाषाएँ आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों द्वारा बोली जाती थीं । इस परिवार की भाषाएँ १०० के लगभग मानी जाती थीं। यूरोपीय उपनिवेश के कारण ये भाषाएँ नष्ट होती जा रही हैं। १६३६ में इनके बोलने वाले ७६ हजार थे। अब ये प्रायः समाप्त हो रहे हैं।

मुख्य विशेषताएँ –

(१) ये भाषाएँ अश्लिष्ट योगात्मक हैं।

(२) प्रत्यय अन्त में जोड़े जाते हैं ।

(३) संख्यावाचक शब्द १, २, ३ हैं । इन्हीं को जोड़कर बड़ी संख्याएँ बनाई जाती हैं।

(४) उत्तमपुरुष द्विवचन और बहुवचन के दो-दो रूप होते हैं –

१. स्व-ग्राही,

२. स्व- वर्जी। एक में वक्ता का भी संग्रह होगा, दूसरे में नहीं ।

(५) कुछ भाषाओं में 'मैं' के लिए पुं० में दूसरा शब्द है, स्त्री० में दूसरा

(६) क्रियारूपों में पर्याप्त जटिलता है। वर्तमान, भूत, भविष्य के अनेक भेद हैं।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

दक्षिण-पूर्व एशियाई (आस्ट्रो-एशियाटिक) परिवार

क्षेत्र — पश्चिम में भारत का उत्तरी पहाड़ी भाग तथा मध्यप्रदेश और उड़ीसा का कुछ भाग। पूर्व में अन्नाम, श्याम, कम्बोडिया । दक्षिण में निकोबार द्वीप।

प्रमुख भाषाएँ –

(१) पश्चिम में—मुण्डा (कोल)

(२) मध्य में - मोन - ख्मेर (Mon-khmer)

(३) पूर्व में – अनामी, मुआङ् (Annam, Muong

(४) दक्षिण में — निकोबार

संक्षिप्त परिचय –

१. मुण्डा – मुण्डा का अर्थ है - मुखिया, जमींदार । मैक्समूलर ने यह नाम दिया था। इसको 'कोल' भी कहते हैं। संस्कृत में कोल का अर्थ 'सुअर' है, अतः यह नाम त्याज्य हो गया है। भारतीयों के एक वर्ग को सुअर कहना अशिष्ट है। २. मुण्डा के दो वर्ग १) हिमालय की तराई में शिमला से बिहार तक बोली जाती है । (२) दक्षिणी – इसमें संथाली, मुण्डारी, भूमिज आदि भाषाएँ हैं। संथाली पूर्वी बिहार और पश्चिमी बंगाल में फैली है। मुण्डारी छोटानागपुर, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और मद्रास में फैली है। संथाली- मुण्डारी आदि का सामान्य नाम 'खेरबारी' है।

भारतीय भाषाओं पर प्रभाव - मुण्डा भाषाओं का प्रभाव भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि पर पड़ा है। जैसे - (१) भोजपुरी आदि में क्रियारूपों की बहुलता और जटिलता । (२) उत्तम पुरुष (हम) के दो रूप —— श्रोता - सहित, श्रोता - रहित । जैसे—' हम हाट जाएँगे' (हम लोग, तुम नहीं), 'अपन हाट जाएँगे' (हम भी, तुम भी) । 'हम' अर्थ में दो शब्द हैं— हम, अपन। (३) कोड़ी (२० संख्या) में वस्तुओं को गिनना ।

मुख्य विशेषताएँ – (१) मुण्डा भाषा ध्वनि की दृष्टि से समृद्ध है। इसमें स्वर और व्यंजन-सघोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण हैं। सभी स्वर, सभी स्पर्श वर्ण (पाँचों वर्ग), अन्तःस्थ, ड़, स, ह हैं । अर्ध व्यंजन क-च-त-प भी मिलते हैं। महाप्राण ध्वनियाँ अधिक हैं ।

(२) शब्द के आदि में संयुक्त व्यंजन नहीं आता ।

(३) बलाघात है। दीर्घ स्वर पर प्रायः बलाघात रहता है।

(४) उत्तम पुरुष सर्वनाम के दो-दो रूप होते हैं --- (१) श्रोता - सहित, (२) श्रोता - रहित ।

(५) संज्ञा, क्रिया आदि शब्द- विभाग नहीं है। एक ही शब्द प्रकरण और आवश्यकता के अनुसार संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि होता है।

(६) लिंग - बोध मूल शब्द में पुरुष और स्त्रीवाचक शब्द जोड़कर कराया जाता है। ऑडिया (नर), एंगा (मादा), कूल (बाघ)। आँडिया कूल (बाघ), एंगा कूल (बाघिन) ।

(७) सम्बन्धतत्त्व मध्य या अन्त में लगता है। उपसर्ग भी लगते हैं । द्वित्व का भी प्रयोग होता है। प-बहुवचन - सूचक है, बीच में जुड़ता है। मंझि (मुखिया)>म पंझि (कई मुखिया)। सैन (जाना) > अ-सैन (ले जाना, प्रेरणार्थक) ।

(८) तीन वचन हैं। कीन (द्विवचन), को (बहु०)। हाड़ (आदमी), हाड़कीन (२ आदमी), हाड़-को (कई आदमी) ।

(६) विभक्तियों का काम परसर्गों से लिया जाता है।

(7) पुरुष (प्रथम, मध्यम, उत्तम) के अनुसार क्रिया में भेद नहीं होता है। क्रिया के अन्त में अ जोड़ते हैं। दल् (मारना) > दलकेत (मारा) ।

(8) गणना विंशतिक (२०) प्रणाली से होती है। कोड़ी (२० वाचक) शब्द मुण्डारी भाषा का है।

भारत - यूरोप

भारोपीय भाषा परिवार

भारोपीय भाषा परिवार यूरोशिया खण्ड का सबसे प्रमुख परिवार है । इस परिवार में मुख्यतः भारत और यूरोप की भाषाएँ सम्मिलित हैं अतः इसका अंग्रेजी में **Indo-European** नाम दिया गया जिसका ही हिन्दी अनुवाद भारोपीय है। भारोपीय भाषा नाम की कोई भाषा हमें उपलब्ध नहीं है। न ही इस भाषा के वास्तविक स्वरूप का ही ज्ञान है। न ही यह ज्ञान है कि भारोपीय भाषा जैसी कोई भाषा यदि रही है तो वह किस क्षेत्र में बोली जाती थी। लगभग सभी विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि कोई प्राचीन भाषा थी जिससे संस्कृत, ग्रीक, लैटिन और उनसे विकसित हुई भारतीय और यूरोपीय भाषाएँ सम्बन्धित हैं । इन सभी भाषाओं के समन्वित स्वरूप की कल्पना करके भारोपीय भाषा की कल्पना की गई है।

नामकरण

इस कल्पित भाषा का नाम 'भारोपीय भाषा' आज लगभग सर्वमान्य है और प्रचलित है । परन्तु प्रारम्भ में इसके नामकरण के विषय में अनेक मतभेद रहे हैं। डा. कर्णसिंह ने इन मतों का संकलन इस प्रकार किया हैं

विश्व के भाषा-परिवारों में भारोपीय भाषा-परिवार सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भारतीय भाषाओं (विशेषतः संस्कृत) के पाठकों के लिए तो इसका महत्त्व निर्विवाद ही है, क्योंकि भारतीय भाषाएँ इसी परिवार की हैं। इस परिवार की अन्य भाषाएँ भी महत्त्वपूर्ण ही है। डॉ. मंगलदेव शास्त्री के अनुसार-

"भारत-यूरोपीय (भारोपीय भाषा-परिवार से आशय उन समस्त भाषाओं से है, जो उस प्राचीन भारत-यूरोपीय मूलभाषा से निकलती हैं। 'भारत-यूरोपीय' शब्द

के प्रयोग से यही अभिप्राय है कि इस भाषा - परिवार के भारत से लेकर यूरोप तक के, भौगोलिक विस्तार की ओर ध्यान दिलाया जा सके। "

नामकरण

इस परिवार के नाम के सम्बन्ध में बहुत विवाद रहा है तथा समय-समय पर अनेक नाम सामने आये हैं,

जैसे-

1. इण्डो-जर्मनिक।
2. इण्डो-कैल्टिक।
3. संस्कृत।
4. जैफाइट या जफ़ेटिक।

5. काकेशियन ।

6. आर्य,

7. इण्डो- योरोपियन (भारोपीय) ।

8. इण्डो- हित्ताइत (भारत-हित्ती) ।

यहाँ इन पर क्रमशः, संक्षेप में, विचार किया जा रहा है-

1. इण्डो-जर्मनिकः यह नाम जर्मन भाषावैज्ञानिकों, विशेषतः, 'मैक्समूलर का दिया हुआ है, जर्मन देश में आज भी यह प्रचलित है। यह नाम इसलिए सुझया गया था, क्योंकि इस परिवार की पूर्वी सीमा पर भारत की भाषाएँ तथा पश्चिमी सीमा पर जर्मनिक भाषाएँ बोली जाती हैं। अतः भौगोलिक दृष्टि तथा जर्मन देश को महत्त्व देने की दृष्टि से यही नाम जर्मनी विद्वानों ने उपयुक्त समझा। किन्तु यूरोप के दूसरे देशों के विद्वानों को यह नाम मान्य नहीं हुआ। उसके दो कारण थे, एक तो इसी परिवार की कैल्टिक शाखा की भाषाएँ, उपर्युक्त भौगोलिक सीमा के पश्चिम में रह जाती थीं : दूसरे, प्रथम महायुद्ध के उपरान्त जर्मनी के प्रति शेष यूरोप में द्वेष की भावना अधिक थी। अतः इस परिवार के नाम में जर्मनी के नाम को महत्त्व देना अन्य यूरोपीय विद्वानों को सह्य नहीं हो सका।

2. इण्डो-कैल्टिकः जैसा ऊपर कहा जा चुका है, यह नाम भौगोलिक सीमा-विस्तार की दृष्टि से यद्यपि इण्डो-जर्मनिक नाम की अपेक्षा कुछ विद्वानों के लिए सार्थक था, तथाकथित केवल भौगोलिक सार्थकता ही पर्याप्त नहीं समझी गयी और यह नाम भी प्रचलित नहीं हो सका।

3. संस्कृतः इस परिवार की भाषाओं में संस्कृत भाषा महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि इसी के अध्ययन द्वारा तुलनात्मक भाषाविज्ञान की नींव पड़ी थी। साथ ही, तब कुछ विद्वानों का यह भी विचार था कि इस परिवार की मूलभाषा भी संस्कृत ही है । किन्तु यह नाम भी एकांगी अनुभव किया गया; क्योंकि, एक तो संस्कृत के समकक्ष ही अन्य ग्रीक', 'लैटिन' आदि भाषाएँ भी इसी परिवार की है। दूसरे, संस्कृत इस परिवार की मूलभाषा नहीं थी । अतः यह नाम भी मान्यता प्राप्त नहीं कर सका ।

4. जैफाइट या जफ़ेटिक: बाइबिल में हजरत 'नूह' के एक पुत्र जेफेट के नाम पर मनुष्य जाति के एक वर्ग को जफ़ेटिक नाम दिया गया है। इसी जातीय आधार पर कुछ विद्वानों ने इस भाषा - परिवार को भी सैमिटिक हैमिटिक की भाँति ही जफ़ैटिक कहना चाहा, किन्तु चूँकि कुछ जफ़ैटिक लोग भारोपीय परिवार से भिन्न परिवारों की भी भाषाएँ बोलते हैं, अतः अवैज्ञानिक होने के कारण यह नाम भी उपयुक्त नहीं समझा गया ।

5. काकेशियन: 'काकेशस प्रदेश के आधार पर इस परिवार को काकेशियन' भी कहा गया, किन्तु एक अन्य समूह की भाषाओं को 'काकेशस' कहे जाने तथा भारोपीय समूह की विशेषताओं से उसकी विशेषताओं के भिन्न होने के कारण यह भी भ्रमात्मक सिद्ध हुआ ।

6. आर्यः पहले समझा जाता था, कि भारोपीय परिवार की भाषाओं को बोलने वाले सभी लोग आर्य हैं, अतः इस परिवार को 'आर्य' नाम देना उचित माना गया। किन्तु एक तो इस परिवार की भाषाओं को बालने वाले सभी आर्य नहीं हैं, दूसरे 'आर्य' नाम की 'भारोपीय परिवार की एक शाखा है, जो भारत तथा ईरान के भाषाओं के लिए बहुत प्रसिद्ध है। अतः पूरे परिवार को 'आर्य' कहना ठीक नहीं समझा गया। यद्यपि 'मैक्समूलर' तथा जैसपर्सन ने इसे फिर भी 'आर्य' नाम से ही अभिहित किया है। किन्तु मुख्य रूप से भारतीय परिवार की 'भारत-ईरानी शाखा को ही विद्वानों ने 'आर्य शाखा' कहा है।

7. इण्डो- योरोपियन या भारोपीयः यद्यपि यही नाम आजकल अधिक प्रचलित है, तथापि डॉ. भोलानाथ तिवारी' इस नाम को भी ठीक नहीं मानते हैं। उनके अनुसार यह नाम जिसे भौगोलिक आधार पर रक्खा गया है, वह आधार भी इससे

ठीक-ठीक प्रकट नहीं होता है। स्पष्ट ही इस परिवार की भाषाएँ केवल भारत-योरोप में न बोली जाकर अमरीका, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका के भी अनेक भागों में बोली जाती है. जैसे अंग्रेजी, फ्रेंच आदि । अतः डॉ. तिवारी के अनुसार यह नाम भी मान्य नहीं होना चाहिए ।

8. विरोस्: यह नाम डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा प्रस्तावित है। उनका तर्क है कि भाषा - विज्ञानविद ने तुलनात्मक अध्ययन (संस्कृत वीर, लैटिन Uir, Vir, प्राचीन आइरी Fer, जर्मनिक Wer आदि) के आधार पर मूल भारोपीय या भारतहित्तीय भाषा के एक शब्द Wiros का पुनर्निमाण किया है और उन मूल लोगों को भी इसी विरोस् शब्द से पुकारा है। यदि हम उन मूल लोगों को 'विरोस्' कह रहे हैं तो उसी आधार पर उस मूल भाषा के परिवार के लिए विरोस् परिवार (Wiros family) का प्रयोग कर सकते हैं।

9. इण्डो-हिट्टाइट (भारत-हितो): वैज्ञानिक दृष्टि से यह नाम सर्वथा उपयुक्त है, क्योंकि अब यह ज्ञात हो चुका है कि 'हित्ती' भाषा भारोपीय भाषा की एक पुत्री नहीं, अपितु भारोपीय की सहोदरा है । अतः अब 'हित्ती' को भारोपीय भाषा परिवार की एक शाखा नहीं माना जा सकता। ऐसी दशा में 'भारत - हित्ती' नाम ही इस परिवार के लिए सोन्युक्त है, और यह पर्याप्त प्रचलित भी हो गया है ।

10. भारोपीय-एनाटोलियनः डॉ. भोलानाथ तिवारी ने ही भारोपीय परिवार के लिए यह नाम भी प्रस्तुत किया है। जहाँ बोलने वालों के आधार पर उन्होंने इसे 'विरोस् परिवार' कहना उपयुक्त समझा है, वहाँ इस परिवार की मूल दो शाखाओं- भारोपीय तथा एनाटलियन के आधार पर वे इसे 'भारोपीय-एनाटोलिअन' या 'भारत-एनाटोलिअन कहना अधिक वैज्ञानिक मानते हैं ।

संक्षेप में, ऊपर भारोपीय परिवार के दस नामों का परिचय दिया गया है। इनमें से कुछ नामों का आधार भौगोलिक है, जैसे 'इण्डो–जर्मनिक', – इण्डो- कैल्टिक' 'इण्डो- योरोपीय', 'इण्डो- हिट्टाइत' काकेशियन' आदि । कुछ नामों का आधार प्रमुख भाषा है, जैसे- संस्कृत । कुछ नामों का आधार जातीय है, जैसे- 'जफ़ाइट, 'आर्य' आदि ।

वस्तुतः, इनमें से कोई भी नाम पूर्णतया उपयुक्त नहीं है । डा. कर्णसिंह बोलने वालों की जाति के आधार पर इस परिवार का नाम 'विरोस् परिवार' ही उपयुक्त मानते हैं । यदि भारोपीय नाम की भाँति ही दो मूल शाखाओं के आधार पर इसका नामकरण करना हो, तो फिर 'इण्डो- योरोपियन' या 'इण्डो- हिट्टाइट' की अपेक्षा 'भारोपीय - एनाटोलिअन' या 'भारत-एनाटोलिअन' नाम को ही हमें स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि इस परिवार की भारोपीय (सतम्' तथ 'केन्तुम वर्गों की

भाषाएँ) तथा एनाटोलिअन जिसमें लीडियन, लीसियन हीरोग्लाफिक, फ्लेइक लूवियन तथा हित्ती या हिट्टाइट भाषाएँ) दो ही मूल शाखाएँ हैं । अतः यह नाम पूर्णतया वैज्ञानिक है। फिर भी अभी तक 'इण्डो- योरोपिअन' नाम की तुलना में कोई भी नाम प्रचलित नहीं हो सका है। सम्भव है, कुछ समय बाद ऐसा हो सके कि भाषा - विज्ञानविद इस परिवार को 'विरोस्' या भारत - एनाटोलियन' नाम से पुकारना अधिक उपुयक्त समझें, किन्तु जब तब ऐसा हो, तब तक इस परिवार को - इण्डो- योरोपिअन परिवार या 'भारोपीय परिवार' कहना ही अधिक उपयुक्त है ।

भारोपीय भाषा का क्षेत्र

भारोपीय भाषा का मूल क्षेत्र कौन सा था, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। इस सम्बन्ध में प्रमुख मत निम्नलिखित हैं-

1. भारोपीय भाषा का मूल क्षेत्र भारत था ।
2. मूल क्षेत्र भारत के बाहर एशिया में कहीं था ।
3. मूल क्षेत्र यूरोप में कहीं था ।
4. मूल क्षेत्र एशिया और यूरोप के संधिस्थल पर कहीं था ।

भारत को मूलक्षेत्र मानने वाले विद्वानों का प्रमुख तर्क यह है कि भारत के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद आदि में आर्यों का कहीं बाहर से आने का उल्लेख नहीं है। यदि आर्य भारत से बाहर किसी प्रदेश से आये होते हो ऋग्वेद में वहाँ के स्थान,

'भारोपीय परिवार' का विभाजन

भारोपीय परिवार की भाषाओं को ध्वनि के आधार पर 'सतम्' और 'केंतुम्' दो वर्गों में रक्खा गया है । कुछ लोगों का विचार हैं कि मूल भारोपीय की आरम्भ में ये दो बोलियाँ या विभाषाएँ थीं । किन्तु यह मान्यता संदिग्ध है।

पहले पहल अस्कोली ने 1870 ई. में विद्वानों के समक्ष यह विचार रखा कि भारोपीय मूल भाषा की कंठस्थानीय ध्वनियाँ (ऊपर दी गई ध्वनियों में प्रथम, तालव्य कवर्ग) कुछ शाखाओं में ज्यों का त्यों रह गईं, पर कुछ में वे संघर्षो (स, श, ज, आदि) या स्पर्श - संघर्षी (च, ज आदि) हो गईं। इसी आधार पर वान ब्रैडके ने इस परिवार के 'सतम्' और 'केन्तुम' दो वर्ग बनाये । इन दोनों शब्दों का अर्थ

100 है। यह नाम इसलिए रखे गये कि 'सौ' के लिए पाये जाने वाले शब्दों में यह भेद स्पष्ट है । 'सतम्' अवेस्ता का शब्द है और 'केंतुम' लैटिन का ।

स्पष्टता के लिए दोनों वर्ग की भाषाओं में 'सौ' के लिए पाये जाने वाले शब्दों को यहाँ देख लेना ठीक होगा-

सतम् वर्ग	केन्तुम वर्ग
अवेस्ता - सतम्	लैटिन – केन्तुम
फारसी - सद	ग्रीक - हेक्टोन
संस्कृत - शतम्	इटैलियन - केन्तो
हिन्दी - सौ	फ्रेंच- केन्त
रूसी - स्तो	ब्रीटन - कैन्ट

बल्गेरियन - सुतो

लिथुआनियन - स्ज़िम्तास

गेलिक क्युड

तोखारी - कन्ध

इन उदाहरणों को दखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक वर्ग (सतम्) में 'स' ध्वनि सर्वत्र है, और दूसरे वर्ग (केंतुम) में वह सर्वत्र 'क' ध्वनि हो गई है। केंतुम् और सतम् में एक और भी अन्तर है। मूल भारोपीय का तीसरा कवर्ग, (क्व, ख्व आदि) केंतुम में तो प्रायः सुरक्षित है, किन्तु सतम् में वह लुप्त हो गया।

आरम्भ में लोगों का यह विचार था कि पश्चिम में पाई जाने वाली भाषाओं को 'केन्तुम्' वर्ग को तथा पूरब में पाई जाने वाली भाषाओं को 'सतम्' वर्ग की कहा जा सकता है। किन्तु बाद में पूरब में हिट्टाइट और तोखारी दो भाषाएँ ऐसी मिलीं,

जिनमें 'स' के स्थान पर 'क' ध्वनि है, अतः पूरब और पश्चिमी के आधार पर वर्ग अलग-अलग करना ठीक नहीं है।

अब दोनों वर्गों (केन्तुम और सतम्) की भाषाओं पर अलग-अलग विचार किया जा रहा है:-

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

1. बान्तू परिवारः कस्य खण्डस्य भाषापरिवारोऽस्ति?

(A) यूरेशियाखण्डस्य

(B) अफ्रीकाखण्डस्य

(C) प्रशान्तमहासागरीयखण्डस्य

(D) अमेरिकाखण्डस्य

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

2. 'पठति' इति क्रियापदं कीदृश्याः भाषायाः उदाहरणमस्ति-

(A) अयोगात्मिकायाः

(B) प्रश्लिष्टयोगात्मिकायाः

(C) श्लिष्टयोगात्मिकायाः

(D) अश्लिष्टयोगात्मिकायाः

पठ् + तिप्

⇓

संस्कृत

3. संस्कृतभाषा कीदृशी अस्ति?

(A) श्लिष्टयोगात्मिका

(B) प्रश्लिष्टयोगात्मिका

(C) अयोगात्मिका

(D) अश्लिष्टयोगात्मिका